eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

पंडित गोविंद वल्लभ पंतः एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में जीवन, संघर्ष और प्रशासानिक योगदान का ऐतिहासिक मूल्याकन''

पूजा[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधार्थी, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य पंडित गोविंद वल्लभ पंत भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख राष्ट्रवादी नेता और कुशल प्रशासक थे। उनका जीवन राष्ट् ही सेवा, सामाजिक न्याय, और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति समर्पण का प्रतीक रहा है। उत्तर प्रदेश के पहलें मख्यमंत्री और स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री रहे। उनका राजनीतिक जीवन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ा रहा, और उन्होंने गांधीजी के नेतृत्व में अनेक आंदोलनों में भाग लेकर जेल यात्राएं भी कीं।

उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और 'भारत छोडो आंदोलन' जैसे संघर्षों में सक्रिय भागीदारी की। आजादी के बाद वे एक कुशल प्रशासक के रूप में उभरे, जिन्होंने भारतीय प्रशासन, भाषा नीति और पुलिस सुधारो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इस ऐतिहासिक अध्ययन का उद्देश्य पंडित पंत के जीवन, संघर्ष और योगदान का विश्लेषण कर आज के सामाजिक–राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों और कार्यों की प्रासंगिकता को समझना है।

प्रमुख शब्द– भारतीय राजनीति, पंडित गोविंद वल्लभ पंत, राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ, जीवन, संघर्ष, प्रशासानिक योगदान

Introduction

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के राष्ट्र निर्माण में अनेक महान नेताओं ने योगदान दिया इन्हीं में से एक प्रमुख नाम पंडित गोविंद बल्लभ पंत का है वे न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में भी उनका योगदान आदित्य रहा उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री स्वतंत्र भारत के गृहमंत्री के रूप में उनकी भूमिका अत्यंत प्रभावशाली रही उनका जीवन देश भक्ति सेवा नैतिकता और लोकतांत्रिक मूल्यों की संजीव प्रतिमा था पंत जी अत्यंत मेधावी और राष्ट्र प्रेम सेओत–प्रोत व्यक्ति थे उनके विचारों विचारों में भाषा संस्कृति धर्मनिरपेक्षता सामाजिक न्याय तथा लोकतंत्र जैसे मूलभूत तत्व स्पष्ट रूप से होते थे यह शोध पत्र पंडित गोविंद बल्लभपंत के जीवनविचारों योगदान और उनके विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रसन्नता का विश्लेषण करता है साथ ही यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि आज के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में पंत जी के सिद्धांत कितने उपयोगी और प्रेरक हैं

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा – गोविंद बल्लभ पंत का जन्म 10 सितंबर 1887 को उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कूट गांव में हुआ उनके पिता मनोरथ पथ एक प्रसिद्ध वकील थे पंत जी ही प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई इसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की वह बचपन से ही मेधावी राष्ट्र प्रेमी और अनुशासन प्रिय थे।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

राष्ट्रवादी चेतना और स्वतंत्रता संग्राम– महात्मा गांधी के नेतृत्व में शुरू हुए असहयोग आंदोलन सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन में पंत जी की भागीदारीउल्लेखनीय रही बी उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के एक प्रमुख नेता बने और उन्होंने विदेशी वेस्टन की होली जलाकर स्वदेशी आंदोलन को प्रोत्साहित किया कई बार जेल गए लेकिन उनके संकल्प में कोई कमी नहीं आई।

संविधान सभा और विद्यार्थी योगदान– भारत की संविधान सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने विभिन्न विद्यार्थी प्रस्ताव पर योगदान दिया विशेष कर संघीय ढांचे भाषा नीति और राज्य प्रशासन के विषयों पर उनके विचार महत्वपूर्ण थे उन्होंने संविधान में हिंदी के स्थान को स्थापित करने हेतु ठोस प्रयास किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य 1953 में भारत के गृहमंत्री सीमा सुरक्षा और राज्यों के पुनर्गठन में एवं भूमिका निभाई जम्मू कश्मीर पंजाब और पूर्वोत्तर राज्य में शक्ति स्थापना हेतु अनेक प्रयास ऐतिहासिक है

भाषा संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान– पंत जी हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने में पक्षधर थे उन्होंने भाषाई एकता को राष्ट्रीय स्टार का मूल आधार माना शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने का समर्थन किया जिससे युवाओं को रोजगार के अवसर मिले ।

लोकतांत्रिक मूल्य और धर्मनिरपेक्षता के प्रतिनिष्ठा– पंत का विश्वास था कि भारत की शक्ति उसकी लोकतांत्रिक परंपराओं में है उन्होंने हर वर्ग जाति और धर्म को सम्मान दृष्टि से देखा और सभी के लिए न्याय की पहली की धर्मनिरपेक्षता को उन्होंने भारतीय संस्कृति का मूल बताया।

सामाजिक न्याय और राष्ट्र सेवा की भावना– उनकी नीतियां सामाजिक समानता पर आधारित थी उन्होंने डाल्टन का पिछड़ों के लिए विशेष योजना चलाएं राष्ट्रीय सेवा उनकी जीवन धारा थी चाहे स्वतंत्रता संग्राम हो या प्रशासनिक दायित्व उन्होंने कभी आत्म हिटको प्राथमिकता नहीं दी ।

विचारों की ऐतिहासिक उपयोगिता– पंत जी के विचार उसे समय अत्यंत प्रभावशाली थे जब भारत नवजागरण की अवस्था में था उनके द्वारा उठाए गए मुद्दे जैसे भूमि सुधार भाषा एकता समाजिक न्याय आज की नीति का चर्चा का विषय है उन्होंने प्रशासनिक दक्षता और जनकल्याण के बीच संतुलन साधने की दिशा दी।

पंत जी के विचारों की आधुनिक

राजनीति में गिरते नैतिक मानदंड– वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में जब भ्रष्टाचार अवसर वह जातिवाद और सांप्रदायिकता हावी है तब पंत जी के सिद्धांतों की ओर लौटना अत्यंत आवश्यक है।

प्रशासनिक सुधार की आवश्यकता– पंत जी ने प्रशासन को जनता का सेवक मानते हुए पारदर्शिता उत्तरदायित्व और जवाब देही पर बोल दिया आज के प्रशासनिक ढांचे को इन्हीं आदर्श से प्रेरणा लेनी चाहिए।

लोकतंत्र की मजबूती– भारत का लोकतंत्र तभी सूत्रण रहेगा जब उसमें भागीदारी इस दिशा में एक प्रकाश स्तंभ है

वर्तमान राजनीति में नैतिकता की आवश्यकता– आज के समय में राजनीति में भ्रष्टाचार व्यक्तिगत स्वास्थ्य धनबाद और बाहुबल की प्रधानता देखी जा रहा है यह स्थिति लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए अत्यंत घातक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

जनप्रतिनिधियों की नैतिक जवाब दे ही– पंत जी का विचारधारा की जनप्रतिनिधिजनता के सेवक हैं उन्हें केवल नीति निर्माता नहीं बल्कि नैतिक आदर्श के पलक होना चाहिए।

सार्वजनिक जीवन में आदर्शवाद– राजनीतीक दलों नेताओ और नौकरशाही को आदर्शवाद और जनसेवा की भावना से कार्य करना चहिए ,जिसमें लोकतन्त्र की गुणवक्ता में सुधार हो सकें।

पंत जी के विचारों को लागू करने की दिशा में सुझाव– शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश विद्यालय से ही नैतिक शिक्षा राष्ट्र सेवा और नागरिक जिम्मेदारियां का प्रशिक्षण आवश्यक है। राजनीति प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना युवा नेताओं को पंत जी जैसे महापुरुषों के विचारों से प्रेरित कर प्रशिक्षित करना चाहिए।

संविधान के मूल्य पर आधारित राजनीतिक संवाद– धर्म निरपेक्षता समानता स्वतंत्रता और न्याय जैसी मूल्य की राजनीति का आधार बनाया जाए।

निष्कर्ष– पंत जी के विचार न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि वह आधुनिक भारत की समस्याओं के समाधान में भी अत्यंत उपयोगी हैं आज जब राजनीति नैतिकता खतरे में है तब पंत जी की विचारधारा एक प्रकाश के रूप में मार्गदर्शन कर रही है यदि भारत को एक सशक्त सुधारण और न्याय पूर्ण राष्ट्र बनाना है तो पंत जी जैसे महान नेताओं के विचारों को न केवल स्नान करना होगा बल्कि उन्हें जीवन और राजनीति में उतरना ही होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. डॉ रामकुमार वर्मा – राष्ट्रनिर्माण में शिक्षा की भूमिका ,प्रकाशकः प्रभात प्रकाशन,दिल्ली।
2. नेहरू,जवाहरलाल - भारत की खोड (पंडित पंत के समकालीनों के विचारों की पृष्ठभूमि हेतु)
3. महात्मा गांधी– हिंद स्वराज नैतिक शिक्षा एंव राष्ट्रनिर्माण की वैचारिक नींव।
4. डा.ए.एन.अग्रवाल – भारतीय प्रशासन और पंत जी का योगदान प्रकाशकः यूनिवर्सल पब्लिशिंग,
5. राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली (पंडित गोविंद वल्लभ पंत के भाषण, लेख, पत्र आदि)
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविघालय (IGNOU)– शिक्षा, नैतिकता और राष्ट्रनिर्माण संबंधी अध्ययन सामग्री